Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 38-47

आलोचना का वैचारिक द्वन्द्व

शालिनी त्रिपाठी
शोध छात्रा (हिन्दी) कलिंगा विश्वविद्यालय कलिंगा विश्वविद्यालय, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़
डॉ. अजय शुक्ला,
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, कलिंगा विश्वविद्यालय, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़
डॉ. कादम्बरी शर्मा,
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, शासकीय डी.एस.वी. स्नातकोत्तर संस्कृत महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

हिंदी आलोचना का जन्म यद्यपि भारतेंदु युग में हुआ हैए लेकिन उसका विकास पूरी तरह से 20 शताब्दी में हुआ। 19 सद़ी में हिन्दी क्षेत्र में स्वाधीनता संग्राम का विस्फोट होता है। जनतंात्रिक चेतना का क्रमशः विकास होता है। नवजागरण युग का प्रारंभ होता है। साहित्य में इस नवजागरण प्रवृत्ति आधुनिक राष्ट्रीयता के साथ सम्पृक्त हो जाती है। जनता में नई चेतना का उन्मेष होता है। जो जनता सादियों से गुलामी में बंधी हुई थी, अपने आपको, अपने आत्म गौरव को भुला चुकी थी, उनमें महापुरुषों के आह्वान के कारण अब चेतना का विकास होता है। जनता साम्राज्यवादी शोषण से परिचित हो गई, साहित्य वस्तुतः नवजागरण की प्रवृत्तिगत नई चेतना की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार नवजागरण जन.चेतना और राष्ट्रीयता का जो संबंधित साहित्य हैए वही सम्बन्ध उसकी आलोचना से भी है।

साहित्य वस्तुतः समाज में होने वाले द्रुतगामी और अन्तरर्परिवर्तनों का साक्षी होता है। एक साहित्यकार अपनी प्रखर चेतना से युग की हलचल को अधिक संवेद्य रूप से अनुभूत करता हैए अभिव्यक्ति प्रदान करता है। एक जागरूक लेखक भी अपने लेखन के जरिये इन संघर्षोंए द्वन्द्वो तथा परिवर्तनों में भागीदार बनता है। वह इस प्रकार समाज में सांस्कृतिक मूल्यां की स्थपना करता है। कुल मिलाकर अपने सामाजिक दायित्व को निभाते हैं ।

आलोचक का दायित्व होता है कि बस संघर्ष के बीच से गुजरे, कृति के माध्यम से युग का साक्षात्कार करेंए उसके संघर्षों को उसके दायित्व कोए उनकी चेतना को, जीवन और बदलते हुए परिवेश और परिपेक्ष में देखेंए समझेए उसके अंतर जगत में प्रवेश करें तथा उनकी उन पक्षों का उद्घाटन करें। जिनको सामान्यत पाठक नहीं समझ सकता। यही आलोचना की सार्थकता हैं। प्रेमचंद रचित निर्मला एक ऐसी ही कृति है। लेखक समाजसापेक्ष रहकर। समाज में व्याप्त कुरीतियों.यथा अनमेल विवाह तथा दहेज

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 38-47

की समस्या भयानक विनाश को उजागर करते हैं। एक आलोचक के लिए कृति का सत्य मानवीय समाज की त्रासदी पूर्ण घटना का सत्य बन जाता है।

पहली बार हिंदी आलोचना को वैज्ञानिक प्रतिष्ठा शुक्ला जी ने दिलाई। व्यवहारिक समीक्षा की प्रतिमान उन्होंने स्थापित किया। स्पष्ट सूक्ष्म निरीक्षण तथा विश्लेषण कृति का अंतर प्रवेश कृतिका ऐतिहासिक संदर्भ गहन अंतर्दृष्टि व्याख्या की प्रधानता बौद्धिकता तारतम्यतम आदि गुना का समावेश कर उन्होंने कविता की मार्मिक पक्षियों की पहचान जैसी दृष्टि हिंदी आलोचना को प्रदान की कवियों के जीवन वृतए जीवन दर्शन, काल परिस्थितियों, कल संबंधी आदर्शि को प्रमुखता प्रदान की । शुक्ला जी ने जायसी और सूर पर विस्तृत समीक्षाएं लिखकर उन्हें पुस्तकाकार त्रिवेणी के रूप में प्रकाशित कर समीक्षा का आदर्श रूप प्रस्थापित किया। शुक्ला जी ने क्रोचे के कालवाद खंडन किया तथा उनकी तुलना कुन्तक की वक्रोक्ति जीवितम् से की।

19 वी सदी की यांत्रिक, वैज्ञानिक तथा मशीनी क्रांति ने जिस उत्पादन सिद्धांत को जन्म दियाए उसने नये संकट पैदा किया। इस आधुनिक सभ्यता व संकट ने अभिव्यक्ति के नए द्वारों का सृजन किया। नई वैज्ञानिक विचारधारा को आत्मसात करने में शुक्ला जी अग्रणी थे। औद्योगिक संस्कृति और वैज्ञानिक आविष्कारों ने मनुष्य के जीवन में कुछ में रहन.सहन में विश्वासों में क्रमशः नवीन परिवर्तन उपस्थित किया। इसकी कारण मनुष्य प्रकृति के पारस्परिक संबंधों में परिवर्तन आया। अन्धविश्वासों के स्थान पर विज्ञान द्वारा परिपुष्ट नई धारणाओं ने स्थान बनाया। मनुष्य ने जगत के साथ अपने संबंधों को विश्लेषित करना आरंभ किया वातावरण ने बृहद संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार को स्थापित किया।

आचार्य शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी के बीच वैचारिक मतभेद यह द्वंद्व कभी नहीं रहा। वस्तुत देखा जाए तो दोनों का अपना.अपना क्षेत्र था आचार्य शुक्ल की दृष्टि नैतिकता वादी लोक कल्याणकारी क्षत्रा धर्म वाली द्विवेदी जी की दृष्टि का विकास प्राचीन शास्त्रों के अवागहन जैसी बातों से हुआ था। हजारी प्रसाद द्विवेदी की दृष्टि व्यापक मानवतावादी उद्धत दृष्टि थी मार्क्सवादी दृष्टि थी पर मार्क्स का नाम उन्होंने नहीं लिया हजारी प्रसाद ने अपनी आलोचना का आधार व्यापक बृहद मानवता को बनाया परिमार्जित परंपरा विश्व मानववाद और सांस्कृतिक दृष्टि यह तीनों उनके उपादान थे। किस प्रकार शुक्ला जी ने यद्यपि हिंदी आलोचना को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया स्पष्ट पद्धति का विकास किया पर उसे व्यापक संस्कृतिक.बोध गहन अंतर्दृष्टि देने का कार्य आचार्य द्विवेदी ने किया रचनात्मक साहित्यकार थे द्विवेदी जी

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 38-47

अतः उनके निबंध में उपन्यासों में और आलोचना में भी रसवादी दृष्टि सर्वत्र दिखाई पड़ती है शोध की दृष्टि से सोच सर्वत्र व्यापक रही है शुक्ला जी रसवादी समीक्षक थे मर्यादवादी और नैतिकतावादी थे द्विवेदी जी उनसे आगे बढ़कर समाज बेहद मानवी चेतना और संस्कृतिक बोध के खोजी समीक्षक थे । इस प्रकार आचार्य शुक्ल ने जिस राष्ट्रवाद की विशेषता की चरित्र की ठोस नींव् समीक्षा में डाली हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बृहद मानवीय चेतना और मानवता से जोड़ दिया।

छायावाद की पहली समर्थक आलोचक आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी थे। वाजपयै की मान्यता पर प्रकाश डालने वाले ग्रंथो मे हिंदी साहित्य 20वीं शताब्दीए आधुनिक साहित्यए नया साहित्यए नए प्रश्नए आधुनिक काव्य रचना और विचारए जयशंकर प्रसादए सूर्य संदर्भ की भूमिकाए महाकवि सूरदासए प्रकीर्णिका का आदि नाम उल्लेखनीय यह । इन कृतियों के अध्ययन से पता चलता है कि उनका साहित्य बौद्ध प्रौढ़ परिपक्व एवं निर्व्यक्तिक है आचार्य शुक्ल ने नए भवबोध की कविता छायावाद को बिल्कुल खारिज कर दिया था पर आचार्य नंद दुलारे जी ने इसका सूक्ष्म एगहनए व्यापक अध्ययन विश्लेषण कर उसके भाव शास्त्रए शब्द सौंदर्य ए नाद सौंदर्य और अभिव्यंजना की नवीन पद्धति को समझ कर उसके साहित्य के साथ न्याय किया। इसी तरह डॉक्टर नागेंद्र बहुमुखी प्रतिभा के लाभ प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं समर्थ निबंधकार आलोचक विचारक व कवि के रूप में हिंदी जगत नागेंद्र जी से परिचित है। डॉ नागेंद्र का जीवन कविता से प्रारंभ हुआ कलंदर में उनका विकास एक समर्थ आलोचक के रूप में हुआ। नगेंद्र ने इस सिद्धांत का व्यापक अध्ययन मनन चिंतन का रस सिद्धांत को विश्वा जनीन बनाने का प्रायत्न् किया। साकेत: एक अध्ययन , विचार और अनुभूतिए रितिका विकी भूमिका, हिंदी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां, रस सिद्धांत आदि ग्रंथ लिखकर हिंदी आलोचना को समृद्ध किया। भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता को खोज निकालने में महत्वपूर्ण हाथ है। भारतीय साहित्य के साथ.साथ इन्होंने पाश्चात्य काव्यशास्त्र कभी सूक्ष्म अध्ययन किया उन्होंने भारतीय साहित्य को एक नई इकाई मानकर उसके सम्यक अध्ययन विश्लेषण विवेचना तथा ज्ञान अनुभूति और आस्वाद के नए द्वार खोले।

इसी तरह रामविलास शर्मा जो हिंदी आलोचना की एक सरल सुबोध वस्तुनिष्ठ आलोचना शैली को विकसित करने का ऐतिहासिक कार्य किया जो पूंजी वादियां साम्राज्यवाद की खुश मत करें उन्हें स्याही बनाने में मदद करें प्रगति के मार्ग पर कांटे बिछाए देश के शत्रु है। हिंदी का शत्रु है । धर्म और संस्कृति के नाम पर जनता का गला घोटकर पूंजीवाद के दोनों को मोटा करना चाहते हैं उनसे सभी

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 38-47

लेखकों को और पाठकों को सावधान रहना चाहिए। डॉ शर्मा यद्यपि आधुनिक साहित्य के समीक्षक है पर उन्होंने तुलसी पर भी लिखा है तुलसीदास की भाषा उनके सामंत विरोधी संघर्ष का ही अंग है। आलोचना में मार्क्सवादियों की संकुचित दृष्टि के बदले अपार दृष्टि है उसमें सूर्य की करने जैसी प्रखरता है किशोर नवल के शब्दों में ष्वे हिंदी के पहले आलोचक हैं जिसमें मार्क्सवादी सौंदर्य शास्त्र को ठीक से न समझकर, क्षेत्र में लागू किया है और उसके आधार पर आलोचना लिखी हैष्। डॉ शर्मा ने कविताए कथा साहित्य नाटक और आलोचना इन सबों की आलोचना की है वे एक प्रतिबद्ध ही नहीं पक्षधर आलोचक है। उन्होंने शुक्ला जी की वैज्ञानिक आलोचना को अधिक प्रकार बनाया। आगे चलकर निराला को परिमल और पन्त् को पल्लव की भूमिका लिखनी पड़ी। इन दोनों ने विस्तार से नए बिम्बो, प्रतिको , अलंकारों, आदि पर बात करते हुए नवीन भाषा छंद एवं अभिव्यक्ति के नवीन मार्गों की चर्चा हिंदी आलोचना के ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए पंत के पल्लव की भूमिका, विमल की भूमिका और प्रेमचंद का 1936 में दिया गया भाषण अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

इन ऐतिहासिक भूमिकाओं की स्थापना और मान्यताओं में एकता नहीं है इनमें आपसी टकराव भी है और पुराण पंथी रूढ़िवादी शास्त्री मान्यताओं का विरोध करते हुए नवीन दृष्टिकोण अपनाने पर आगरा दिखाई देता है यह लोग अपने.अपने ढंग से नए पान की व्याख्या कर रहे थे तुम ही छायावाद की व्यक्तिकता, और सूक्ष्म अभ्यंजन शैली के साथ कविता और भाषा ने जो स्वरूप ग्रहण किया, उसे स्पष्ट करते हुए पंत जी ने पल्लव में व्यक्तिक आग्रह का पक्ष लिया। उसे समय के भावबोध और शिल्पबोध की संतुलित सामंजस्य पक्ष लेकर ममता जी ने आधुनिकता को स्वीकार करने का आग्रह किया। परिमल की भूमिका में निराला ने छंदों से मुक्ति की घोषणा कर उघोष किया श्कविता की मुक्ति कोश् कठिन चेतना के प्रसार में एक तरीके के रूप में समझा।

प्रेमचंद ने अपने भाषण (1936) मैं साहित्य की नई परिभाषा देने कीए नई सौंदर्य दृष्टि अपने की बात कही। प्रेमचंद की चिंता महान थी और उनकी महानता इस बात में निहित है कि साहित्य के केंद्र में मानवीय मूल्य की प्रतिष्ठा हो। प्रेमचंद का यह व्याख्यान हिंदी के अपने सौंदर्य शास्त्र की रचना के लिए महत्वपूर्ण है। यह जन जागरण का सौंदर्यबोध है। प्रेमचंद जी ने कहा था अब और अधिक सोना मृत्यु का लक्षण है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 38-47

इस पृष्ठभूमि पर डॉ राम विशाल शर्माए शिवदान सिंह चौहानए प्रकाश चंद्रगुप्त आदि ने हिंदी आलोचना में मार्क्सवादी आलोचक के रूप में प्रवेश किया। इस युग में वैचारिक संघर्ष आरंभ हो गया था सामाजिक राजनीतिक विकास, साहित्य की विकास धरा और आलोचना कर्म तीनों मिल गए। मानवता की पक्ष में, मानवीय पुरुषार्थ के पक्ष में मानवीय संस्कृति के पक्ष में विचारधारा क्रमशः करवट लेती दिखाई देती है। यह आकस्मिक नहीं है आकाश चंद्र गुप्ता ने हिंदी साहित्य की श्जनवादी परंपराश् की पहचान की और उसे स्थापित किया। शिवदान सिंह चौहान की श्आलोचना के सिद्धांत श् नामक पुस्तक में आधुनिक सौंदर्य बोध के रूप में संस्कृत काव्यशास्त्र पर विचार किया। और उनकी सीमाएं दर्शायी। श्री खगेंद्र ठाकुर के शब्दों में डॉ राम विलास शर्मा ने भारतेंदु, प्रेमचंद, रामचंद्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी, आदि की रचनात्मकता का ऐतिहासिक विवेचना करते हुए हिंदी नवजागरण की अवधारणा पेश की ष्।

इसी तरह डॉ. नामवर सिह आधुनिक काव्य की प्रवृत्तियां नामक पुस्तक में छायावाद , रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि पर सैद्धांतिक टिप्पणी करते कभी, संबंधित काव्य दृष्टांत देते हुए, यथार्थवादी पक्ष को मजबूत किया।

इस प्रकार उन्होंने श्कविता के नए प्रतिमानश् में मुक्तिबोध को नई कविता के केंद्र में रखकर उसकी व्याख्या की। नायक की पहचान की गई। उसे यथार्थवादी पक्ष .मजबूत हुआ। मुक्तिबोध का वैचारिक पक्ष इस दृष्टि से काफी मजबूत है। इसी धारा को आगे अनेक लोगों ने समृद्ध किया, जैसे शिवकुमार मिश्र, मैनेजर पांडेय, विश्वनाथ त्रिपाठी, कमला प्रसाद आदि। दूसरी तरफ आगेय्, निर्मल वर्मा ,अशोक बाजपेयी के नव. रीतिकाल, कलावाद, रमेश चंद्र शाह के व्यक्तिवाद आदि को चुनौती दी गई। इस प्रकार वैचारिक संघर्ष की दृष्टि से हिंदी में स्पष्टतः दो खेमे में बन गये। एक खेमा प्रतिवादी मार्क्सवादी जनवादी खेमा दूसरा खेमा सौंदर्यवादीए रीति.वादी कलावदी खेमा। दोनों खेमे आज भी परस्पर टकराते हैं, और समांतर गति से चलते जाते हैं।

उत्तर आधुनिकता

उत्तर आधुनिकता के नाम से हिंदी में नई अर्थव्यवस्था के समानांता नहीं विचारधारा आयातित की गई उत्तर आधुनिकता वास्तव में औद्योगिक पूंजीवाद की रक्षा की विचारधारा है खगेंद्र ठाकुर के शब्दों में आज की मार्क्सवादी आलोचना यथा स्थिति वादी सदीवादी चिंतन से प्रेरित हिंदी आलोचना के

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 38-47

औपनिवेशिक प्रभाव से हमारे चिंतन को बचा रही है यही आज का वैचारिक द्वन्द । छायावाद और प्रतिवाद में क्रमशः व्यक्ति और परिवेश पर बल के अनुपात पर द्वंद छेड़ा था क्रमशः दोनों के मूल्यांकन की आवश्यकता हुई। व्यक्ति और परिवेश दोनों में से किसी पर काम और किसी पर अधिक ज्यादा बल देने वाली प्रवृत्तियां हमारे समय में मनुष्य की जो झलक दिखाई देती है एकांकी होती है इसीलिए कहीं व्यक्ति बात प्रबल है तो कहीं समाजवाद।

आदर्श और यर्थात को लेकर हिंदी आलोचना में अपने.अपने आग्रह रहे हैं यह आग्रह प्रेमचंद में भी दिखाई पड़ती है द्वंढ के मध्य क्रमशः यथार्थ की जीत हुई प्रेमचंद की परवर्ती कहानी उपन्यास इस बात की सूचक है। आदर्श का यर्थाथ कारण धार्मिक स्थान पर यथार्थ का आदर्शकरण विश्वकरना चाहता है मुक्तिबोध की शब्दावली में ज्ञानात्मक संवेदना और संवेदनात्मक ज्ञान बाह्य अभियंत्रिकीकरण की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। मुक्तिबोध की यह शब्दावली समुचित ही जान पड़ती है जो वस्तु पारक है उसे संवेदना का अंग बना लेना तब तक संभव है जब तक उसमें आत्म परक बना लिया जाए।

संस्कृति और कला का घनिष्ठ संबंध है प्रत्येक संस्कृति के मूल में एक जीवन दर्शन होता है। साहित्य और विचार के बीच गहन संबंध है। साहित्य को विचारों का भावों का समूह कहा जाता है एक युग के विचारों का पता लगाने के लिए उसे युग के साहित्य का अध्ययन किया जाता है डॉ॰ जॉनसन ने कहा है किष् युग के विचारों को जानने के लिए हमें उसे युग में संचार करना पड़ेगा । सामाजिक प्रगति वैचारिक विकास हेतु साहित्य में विचारों का समावेश आवश्यक है। सामाजिक न्याय शोषण मुक्त समाजवादी की स्थापना हेतु सुनिश्चित विचारधारा की आवश्यकता पड़ती है। यह विचारधारा है आपस में टकराती है उदाहरण के तौर पर धार्मिक विचार प्रतिवादी विचारधाराओं की टकराहट साहित्य में भी अवश्यम्भावी है। विक्टोरियन युग में विज्ञान और धर्म के बीच टकराहट हुई जागरण कल के कवियों की विचारधारा पर स्वामी दयानंद सरस्वतीए गांधी अरविंद महर्षिए विवेकानंद आदि के विचारों का प्रभाव दिखलाई पड़ता है।

हिंदी आलोचना में क्रमशः द्वंद बढ़ता गया। वैचारिक संघर्ष की विभिन्न पक्षों की दिशा निश्चित व स्पष्ट होती है जैसे आज्ञेय ने जब त्रिशंकु के निबंधों राजनीति से दूर रखनेए जैनेंद्र ने साहित्य को जन संघर्ष से अलग रखने में सौंदर्यबोध प्राप्त किया सभी मार्क्सवादी या प्रतिवादी आलोचकों ने जनसंघर्ष से

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 38-47

साहित्य को जोड़ने की बात कही। संक्रमण की प्रक्रिया में बड़े लेखक में अन्तर्विरोधी होना स्वाभाविक हैए लेकिन जो प्रवृत्ति आधुनिक पहचान बनती हैए वह नवीन विचारों का स्वीकार है।

प्रकृति द्वन्द्वात्मक है। मार्क्स एंगेल्स ने समाज तथा उसकी इतिहास पर इसे लागू किया। परस्पर विरोधी वर्गों के टकराव और उनके अन्तर्विरोधियों का प्रभाव समाज पर पड़ता है। अतरू कला के अभिप्रायए संदेशए सारतत्व और रूप .शिल्पी में भी बदलाव होगा। ज्यों ज्यों मनुष्य ने प्रकृति को बदलना सीख गयाए त्यों त्यों उसकी बुद्धि का विकास होता गया। यह विकास द्वंद द्वारा ही संभव हुआ। संपदा का उत्पादन और पुनरुत्पादन मानव समाज की अस्तित्व और विकास की बुनियादी शर्त है। भाववादी विचारक कल्पना का संबंध ईश्वर से जोड़ते हैं। समस्या समाधान लक्ष्य प्राप्ति के निमित्त किया गया चिंतन विचारधारा है। महादेवी वर्मा का मत है कि ष् कल्पना और भावबोध का संबंध रचनात्मक स्तर पर विचारधारा से होता है धर्मवीर भारती नई कनुप्रियाए और युग में जो अकेलापन सन्त्रास अस्तित्व की संकट उत्पन्न हुआ है वही नवीन सोच नहीं मानसिकता की उपज नई है

टी एस इलियट के अनुसार ष् उत्तम काव्य वही है जिसमें विचार भावमय तथा भाव विचार में बनकर एक रूप एक रंग हो जाता है।श् यशपाल की दिव्या या निराला की वह तोड़ती पत्थर में साम्यवादी विचारधारा अत्यंत कलात्मक ढंग से प्रस्तुत हुई है। मार्क्सवादी विचारधारा की छोटी कवियों के हँसियेए हथौड़े हथौड़ेए लाल झंडे और लाल निशान वाले विचारों की कविताएं मात्र लफ्फाजी और नारेबाजी बनकर रह गई है

मुख्य रूप से हिंदी आलोचना में तीन प्रकार की विचारधाराओं की टकराहट दिखाई पड़ती की

1. भाववादी या प्रत्ययवादी विचारधारा जिसका प्रतिनिधित्व छायावादी रहस्यवादी कविताएं करती है।

2 मनोवैज्ञानिक विचारधारा जिसका प्रतिनिधित्व जैनेंद्र आज्ञेय आदि करते हैं।

3 मार्क्सवादी विचारधारा जिसका प्रतिनिधित्व करने वाले डॉ रामविलास शर्मा डॉ नामवर सिंह बहुत सारे आलोचक हैं।

किसी विचारधारा है आपस में टकराती रहती है भाववाद, भाग्यवाद, ईश्वरेच्छा, पुनर्जन्म मनोजगत की गहराईया समाज यथार्थ जैसी विचारधाराएं आपस में संघर्षरत रहती है तथा निष्कर्ष स्वरूप सत्य संधान सामने आते हैं । अंततः साहित्य कलात्मक अभिव्यक्ति है अतः भाई साहित्य स्थाई बनता है जो

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 38-47

जीवन के निकट होता है तथा जिसमें कलात्मक अनुभूति होती है । वस्तुत आलोचना जीवन को देखने और उसे सम्यक्तर अभिव्यक्ति प्रदान करने का पैर रखने का माध्यम है विचारों के द्वंद से ही सत्य प्रकट होता है । यह सृष्टि द्वन्दमयी है श्वदे.वाद जयते तत्वबोधारूश् तत्वबोध के लिए विचारों की टकराहट आवश्यक है यही जीवन का मूल्य है सत्य भी यही है और यही साहित्य का भी सत्य की

ष्अच्छी आलोचना तो वही है जो सार्थक प्रश्न उठाती है सवाल उठाती है हस्तक्षेप करती कीष् परमानंद श्रीवास्तव के अनुसारष् सही आलोचना रचना और आलोचना दोनों से परिचय कराती है वरिष्ठ कवियों में मुक्तिबोधए रघुवीर सहाय आलोचना प्रक्रिया देखे तो नई कविता के परिपेक्ष कि केंद्र में उनके अरुण कमलए कुमार विमल आदि स्थित है । आलोचना लिखते हुए सार्थक बना स्थिति की अपेक्षा की जाती है इस सदी में कभी हिंदू उर्दू का विवाद उत्पन्न हुआ कभी भाषा का तुलनात्मक आलोचना को लेकर जैसे देव.बिहारीए सुर.तुलसी अभी आज्ञेय .मुक्तिबोध अपने सामने खड़ा किया गया तथा उन्हें आपस में टकराया गया छायावाद को लेकर विदेशी और भारतीयता के प्रश्न उठाए गए हिंदी नवजागरण को लेकर डॉ रामविलास शर्मा ने आलोचना नये आयाम खोज निकाले विचारधारा और साहित्य प्रतिबद्धता एक और मुद्दा रहा।

यर्थात व तथा आधुनिकतावाद, उत्तर.आधुनिकता, प्रतीक वाद. प्रयोगवाद, लेखकीय स्वतंत्रता पक्षधरता .प्रतिबद्धता, टकराव की स्थिति के जनक रहे। हिंदी लेखन में प्रच्छन्न रूप से ही सही एक और प्रजातांत्रिक शक्ति बलवती हो रही है तो दूसरी और मार्क्सवादी विचारधारा सशक्त हो रही है

वस्तुतरू भारतीय साहित्य चिंतन संक्रमण काल से गुजर रहा है। समाज को विचारधाराए परिचालित कर रही है ।आलोचना कला है सामान्य तौर पर साहित्यकार अतः कवि लेखक उपन्यासकार इत्यादि के द्वारा भावनाओं को शब्दों के माध्यम से लिखित रूप से प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं। सामान्य तौर पर एक कवि लेखक उपन्यासकार समाज में व्याप्त के सामाजिक समस्याओं को साहित्यिक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास करता है ऐसे में अधिकांश लेखक अथवा कभी उपन्यासकार यह प्रयत्न करते हैं क्या अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य का अपने ढंग से अथवा ढंग से अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं ।आमतौर पर यह देखा जाता है कि अक्सर लोग कवि और कहानीकार की बातो मे आकर उनकी भावनाओं में बहकर इनके द्वारा बताए गए तथ्यों को ही कभी. कभी सत्य मान बैठे हैं । आलोचना का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। हम साहित्य जगत में इसे भारतेंदु

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 38-47

युग हो या ज्ञानेंद्र के समय हो से या मुक्तिबोध के काल अथवा हरिशंकर प्रसाद जी के काल से जोड़ते हैं किंतु सत्य तो यह है कि आलोचना की परंपरा इतिहास के प्रारंभ के साथ ही मानी जा सकती है सामान्य तौर पर देखी तो ऐसा इसलिए कहना अति आवश्यक है क्योंकि सत्य के साथ जहां सत्य जुड़ा हुआ है सुख के साथ जहां सुख जुड़ा हुआ है दिन के साथ रात जुड़ा है तो उसी प्रकार से जहां पर किसी तथ्य का विस्तृत वर्णन है तो वहां पर भी उसकी कमियां

आलोचना के रूप में अवश्य उभर कर आती है यह बात अलग है । देशकाल स्थिति और समय के अनुसार सूचना की परंपरा धीमी रही हो इसलिए भी माना जा सकता है क्योंकि आलोचना की तरह होती है अक्सर कहां जाता कि सत्य कड़वा होता है आलोचना भी एक प्रकार से सत्य का ही दूसरा रूप है। अगर हम किसी व्यक्ति के गुना की तारीफ करते हैं तो निश्चित ही वह उसका अपना व्यक्तिगत पक्ष हो जाता है । आलोचना को भले ही साहित्य के क्षेत्र में अपनी जड़े जमाने में काफी समय लगा हो लेकिन इतना तो स्पष्ट है कि आलोचना के आने से कई कपोल कल्पित बातों की वास्तविकता का भान सामान्य पाठक के समक्ष प्रस्तुत होने लगा। चुकी व्यक्ति कविता कहानी एवं उपन्यास में समानता सामाजिक राजनीतिक आर्थिक समसामयिक घटनाओं के ऊपर में चिंतन मनन पर ही विचार करता है बहुत नकारात्मक विचारों को बेहद कम स्वीकार करता है ।

मसलन यह मानकर चलिये जिस तरह हम एक चलचित्र को देखते हैं तो उसे वक्त हमारे मानस पटल पर अच्छी बातें ही अर्थात मनोरंजन तत्व ही हमारे मानस पटल पर विद्यमान होते हैंए नकारात्मक एवं अस्वीकरणीय परिस्थितियों एवं पत्र चलचित्र में प्रवेश करते हैं तो हम उसे नापसंद कर देते हैं किंतु यह उसे चलचित्र की वास्तविकता होती है एक समाज का आईना होता है उन परिस्थितियों में केवल रंजना के नाम पर केवल शिकार योग्य तथ्यों को ही दिखाना ज्यादा लाभ कर नहीं होता है अभी तो उसमें कुछ ऐसी बातों का भी समावेश आवश्यक हो जाता है जिससे दर्शक अच्छे और बुरे का भेदभाव कर सके। ठीक इसी तरह साहित्य में भी आलोचना के बिना साहित्य के वास्तविक मर्म् को नहीं समझ सकते । अतः साहित्य की पूर्णता अर्थात उसकी व्यापकता का अवलोकन सूचना के माध्यम से बेहद ही सटीक तरीके से समझ सकते हैं।

मुख्य लेख हिंदी आलोचनाओं की सूची

- हिंदी नवरत्न 1910 मिश्रबंधु

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 38-47

- देव और बिहारी कृष्ण बिहारी मिश्र
- बिहारी और देव लाला भगवानदीन
- अलंकार मंजूषा 1916 लाला भगवानदीन
- काव्य कल्पद्रुम 1926 कन्हैया लाल पोद्दार
- रस कलश 1931 अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध साहित्य पारिजात 1940 शुकदेव बिहारी मिश्र (श्याम बिहारी मिश्र, गणेश बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र)
- काव्यदर्पण 1947 रामधहिन मिश्र
- रसज्ञ रंजन 1920 महावीर प्रसाद द्विवेदी